FEUDALISM (PART-2)

FOR: P.G.SEM-1,CC-2,UNIT-4

BY:ARUN KUMAR RAI
ASST.PROFESSOR
P.G.DEPT.OF HISTORY
MAHARAJA COLLEGE
ARA.

उदय के कारण-सामाजिक

रोमन साम्राज्य के पतन के काल में दो प्रथाएं प्रचलित थी जिनमें भविष्य के सामंतवाद के बीज निहित थे|यह प्रथा ***प्रिकेरियम*** तथा ***पैट्रोसिनियम*** थी। प्रिकेरियम एक प्रकार की भूमि व्यवस्था थी और पैट्रोसिनियम एक प्रकार का व्यक्तिगत संबंध व्यवस्था था। उन दिनों अराजकता, असुरक्षा ,आर्थिक संकट एवं सामाजिक दबाव के कारण रोमन साम्राज्य का छोटा किसान असुरक्षित अनुभव करता था। अतः छोटा किसान अपनी जमीन पर अपने से बड़े भूस्वामी का स्वामित्व स्वीकार कर लेता था यद्यपि जमीन पर मिल्कियत उसी की बनी रहती थी।

सामाजिक कारण

पैट्रोसिनियम प्रथा के अनुसार धनी और प्रभावशाली व्यक्ति संरक्षक बनकर अपने अनुयायियों का एक बड़ा दल तैयार कर लेते थे। भूमिहीन मजदूर अथवा कारीगर को भी सुरक्षा की आवश्यकता थी अतः किसी भूमि पति के पास जाकर रक्षा के बदले में अपनी सेवाएं अर्पित करता था ।इस तरह बड़े भूस्वामियों की जागीर में ऐसे असामियों की बस्ती बसाई गई और अनायास ही उनके साथ समर्थकों के बड़े- बड़े दल तैयार होते गये।

सामाजिक कारण

- सामंतवाद में रोमन के अतिरिक्त सेल्टिक तत्व भी थे। गॉल के सेल्टो में एक प्रथा थी जिसके अनुसार नेता अनुयायियों से घिरा रहता था यह अनुवाई उसकी ओर से युद्ध में भाग लेते और उसकी आज्ञा का पालन करते थे तथा उसके दान पर जीते थे। इस प्रथा को ***कमेन्डेसन*** कहते थे।
- इसी प्रकार जर्मनी में प्रत्येक नेता के साथ स्वामी भक्त योद्धाओं का एक दल होता था जिसे ***कोम्मिमेटस*** कहते थे। धीरे-धीरे इन सभी तत्वों का विलय हुआ। विभिन्न वर्गों के अंतर के आधार पर सामंतों के दो वर्ग अस्तित्व में आए। प्रत्येक सामंत की अपनी जागीर अथवा मेनार थी।

राजनीतिक कारण

पांचवी शताब्दी में बर्बर जातियों के आक्रमण के फलस्वरूप रोमन साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो गया और उसके स्थान पर कई स्वतंत्र राज्यों की स्थापना हो गई। रोमन साम्राज्य के विघटन काल में पश्चिमी यूरोप में अराजकताऔर अशांति फैल गई। वाहय आक्रमणों के कारण भी किसानों की अवस्था दयनीय हो गई क्योंकि उनकी रक्षा करने वाला कोई नहीं था। जमींदारों को भी अन्य जमीदारों से भय बना रहा था ।अतः किसानों और जनसाधारण की तरह उन्हें भी सुरक्षा की आवश्यकता थी ।इस प्रकार दोनों को एक दूसरे की सहायतता की आवश्यकता थी।

राजनीतिक कारण

किसानों को अपनी रक्षा के लिए जमींदारों के आश्रय की आवश्यकता थी क्योंकि उनके पास अस्त्र-शस्त्र अथवा दुर्ग थे। जमींदारों को सेना में भर्ती होने वाले लोगों की आवश्यकता थी। इस प्रकार सामंतवाद का जन्म हुआ।

- रोमन साम्राज्य के पतन का प्रभाव यूरोप की शासन व्यवस्था पर भी पड़ा ।रोमन साम्राज्य के विघटन के काल में जमींदारों एवं शासकों ने स्थानीय शासन में स्वतंत्रता प्राप्त कर ली। अब उन्हें कर वसूल करने एवं सैनिक सहायता देने के कामों के अतिरिक्त न्याय करने तथा कानून बनाने का अधिकार मिल गया।

राजनीतिक कारण

जमींदारी न्यायालय स्थापित हो गए जिनमें प्रजा को दंड देने या जुर्माना लगाने का कार्य होने लगा। जमींदार स्वतंत्र राजाओं की तरह रहने लगे तथा शासन चलाने लगे एंव अपनी सुरक्षा के लिए अपने से शक्तिशाली जमींदार का संरक्षण प्राँप्त करने लगे।

- रोमन साम्राज्य के पतन के बाद जर्मन विजेताओं ने पश्चिमी यूरोप में सामंती प्रथा को फैलाया। यह विजेता जीती हुई भूमि को अपने अनुयायियों के बीच बांटने लगे।

राजनीतिक कारण

ये अनुयायी अपने नेता को बिना पारिश्रमिक के ही सेवा देते थे परंतु अब इन्हें जमीन मिलने लगी और नए जमींदार ***नाइट*** कहे जाने लगे ।ये नाइट मध्यकालीन भारतीय क्षत्रियों की तरह प्रसिद्ध योद्धा थे ।इस तरह गॉल,इंग्लैंड एवं अन्य देशों में सामंतवाद का जन्म और विकास हुआ।

आर्थिक कारण

- रोमन साम्राज्य के अंतर्गत बड़े- बड़े जमींदार वर्ग का उदय हुआ जिनके अधीन काफी बड़ी भू-संपत्ति रहती थी। वह अपनी भू संपत्ति को बढ़ाने के लिए किसानों से ऊंची कीमत पर उसकी जमीन लेते थे फलस्वरूप किसान भूमिहीन होते चले गये|स्वतंत्र किसानों की संख्या घटती गई। प्रारंभ में जमींदार लोग खेती का काम दास से लेते थे परंतु दासों की उदासीनता के कारण कृषि की अवनति हुई और उपज कम होने लगी।

आर्थिक कारण

- रोमन लोग कृषि संबंधित वैज्ञानिक उपकरणों के अविष्कार करने में असमर्थ थे ,ऐसी स्थिति में गुलामों को ही कुछ सुविधा देकर उपज बढ़ाने पर विचार किया गया ।उन्हें स्वतंत्र जमीन दी गई । उन्हें अपना भूमि की उपज का अपना निश्चित भाग मालिक को देना पड़ता था । वे कृषक दास या ***कम्मी*** कहलाये। स्वामी तथा दास के आपसी संबंधों का मुख्य आधार भूमि हो गया।इससे सामंतवाद का विकास हुआ ।

सामंतवाद का स्वरूप- आर्थिक

सामंती व्यवस्था में भूमि की प्रधान भूमिका थी और इसी पर पूरी सामंती व्यवस्था टिकी हुआ था। शासक वर्ग के लोग भूमि के स्वामी थे। भूमि स्वामित्व ने इन्हें जमींदार बनाया दियाी। वे काश्तकार के जरिए खेती करवाते थे। यही नहीं युद्ध के समय ये काश्तकार जमींदारों के लिए धन जुटाने का काम करते थे। यह सहायता ***सेवा*** कहलाती थी। छोटे-छोटे काश्तकार भी खेत में काम नहीं करते थे ।वे सामंतों से प्राप्त सारी भूमि कम्मियों को दे देते थे जो दासों से थोड़ा ऊपर थे। कुछ जमीने अनाज पाने और बेगारी करने के शर्तों पर किसानों को दे देते। यह किसान दुर्गों के आसपास गांव बसा कर रहने लगे जिन्हें ***मनोर*** कहा जाता है । भूमि पति और मनोर के संबंध निर्धारित करने में भूमि महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

सामाजिक स्वरूप

- सामंतवाद का सामाजिक स्वरूप भी पिरामिडनूमा था|राजा समाज का सर्वोपरि व्यक्ति था |उसके नीचे सामंत, सामंतों के कम्मी और मनोर थे| राजा या सामंत को धन और जन देकर ही छोटे किसान और कम्मी सच्ची वफादारी का प्रदर्शन करते|शोषक सामंतों के लिये राजा के प्रति वफादारी दिखलाना आसान था पर अन्य वर्गों के लिए यह काफी महंगी पड़ती थी| एक वर्ग न कुछ करते हुए भी स्वामी था जबकि दूसरा वर्ग सब कुछ करते हुए भी दरिद्र और अधिकारविहीन|

राजनीतिक स्वरूप

- सामंतवाद का राजनीतिक ढांचा भी पिरामिड की तरह था। राजा सर्वोपरि और संपूर्ण भूमि का स्वामी था जिन्हें वह बड़े सामंतों और बड़े सामंत अपने से छोटे सामंतों के बीच कुछ शर्तों पर बाँटते चले गए। सामंत आवश्यकतानुसार राजा की सैन्य सहायता कर देते थे और उनके दरबार में बैठकर आवश्यक परामर्श दिया करते थे परंतु अपने क्षेत्र के आंतरिक प्रशासन में पूर्णता स्वतंत्र होते थे। बाद में पादरी वर्ग के लोगों को भी यह विशेषाधिकार प्राप्त हो गये।

राजनीतिक स्वरूप

- सामंती शासन इस प्रकृति से सामंतों को लाभ थे पर छोटे छोटे किसान तथा मनोरो को हानि थी। कम्मियों को किसी प्रकार की प्रशासनिक और नागरिक अधिकार प्राप्त नहीं थे। इस तरह से सामंतवाद में सामंत अधिकाधिक शक्तिशाली और अधिकार युक्त होते जाते थे और कम्मी तथा मनोर दुर्बल तथा अधिकार विहीन।

To be continued......